B.M.A COLLEGE , BAHERI,DARBHANGA
(A CONSTITUENT UNIT OF LNMU)
BA DEGREE-1
HISTORY HONS.
PAPER-1
UNIT-5(IV)
DEPARTMENT OF HISTORY
PANKAJ KUMAR MISHRA
DATE-23/09/2020

TOPIC:- प्राचीन भारतीय संस्कृति

ANCIENT INDIAN CULTURE

PART-5

Scanned with CamScanner

प्राचीन भारतीय संस्कृति

मौर्योत्तरयुगीन

निर्माण के पीछे का आधार

1. राजकीय संरक्षण तो प्रायः नहीं था लेकिन प्रायः राज्य सहिष्णु नजर आते हैं। इक्ष्वाकु राज्य की रानियों ने संभवतः बौद्धों का संरक्षण किया था, जिससे इनके विकास में गति आयी होगी।

2. सबसे बड़ा संरक्षण श्रेणी संघों ने दिया।

3. मौर्यों की पृष्ठभूमि। यहाँ विशेष रूप से यह स्मरणीय है कि मौर्य काल की तरह स्वतंत्र स्तंभों की परंपरा मौर्योत्तर काल में नजर नहीं आती। बेसनगर का गरुड़ ध्वज यदि मिला भी है तो कलात्मक रूप से उन्नत नहीं है। इस काल में स्तंभ वस्तुतः चैत्यों से जुड़ गए।

मूर्तिकला

1. स्तूपों पर निर्मित मूर्तियों का विकास
2. गंधार कला
3. मथुरा कला

मूर्ति- निर्माण की सामग्री, निर्माण का संतुलन, निर्माण का विषय, निर्माण का संरक्षण और युग की अभिव्यक्ति जैसे विषयों का अध्ययन मूर्तिकला का केन्द्रीय विषय होते हैं।

मथुरा कला

सामग्री — मथुरा कला के अंतर्गत लाल रवेदार पत्थर एवं बलुआ पत्थर का प्रयोग मुख्यतः देखा जा सकता है।

संतुलन — मथुरा कला के अंतर्गत दोनों स्तर की मूर्तियाँ एवं कुछ अर्द्धनिर्मित परिष्कृत मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं

शैली — मथुरा कला की शैली आदर्शवादी थी।

मथुरा कला की आदर्शवादी शैली के अंतर्गत मथुरा की मूर्तियों में बुद्ध के अंदर बौद्ध आदर्श नजर आता है, जिसकी काया दुर्बल है, जो उपदेशक की तरह नजर आती है इसमें बुद्ध के चेहरे पर ज्ञान का संतोष और सुख से दिप्त नजर आता है लौकिक जगत का ऐश्वर्य और आमामंडल नहीं।

23/03/2020

Scanned with CamScanner